# विश्व न्याय मन्दिर

29 अगस्त 2010

विश्व के बहाईयों को,

परमप्रिय मित्रों,

एक शताब्दी पूर्व, पोर्ट सईद के लिये, अब्दुल-बहा के प्रस्थान ने, धर्म के इतिहास में एक नये गौरवशाली अध्याय का प्रारम्भ किया। वे तीन वर्षों तक पवित्र भूमि में लौटने वाले नहीं थे। बाद में, उस ऐतिहासिक घड़ी का उल्लेख करते हुए, धर्मसंरक्षक ने लिखा, “पश्चिमी ध्रुव में बहाउल्लाह के धर्म की स्थापना -- अत्यंत उल्लेखनीय वह सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि जो हमेशा अब्दुल-बहा के कार्यकाल से जुड़ी रहेगी -- ने ... ऐसी प्रबल शक्तियों को प्रसारित किया और ऐसे सीमातीत परिणामों को उत्पन्न किया कि स्वयं संविदा के केन्द्र की व्यक्तिगत सक्रिय-भागीदारी को सुनिश्चित किया। ”अब्दुल-बहा की पश्चिम की यात्रा के शुभारम्भ के साथ, बहाउल्लाह के धर्म ने, जिसे आधी शताब्दी से अधिक समय तक शत्रुओं के प्रहार और विरोध का सामना करना पड़ा, स्वयं को बंधन-मुक्त किया। धर्म के प्रारम्भ से लेकर पहली बार धर्म के स्वीकृत मुखिया ने, निर्धारित दैविक उद्देश्य की प्राप्ति के लिये, भार मुक्त होकर, कार्य करने की स्वतंत्रता प्राप्त की।

अब्दुल-बहा के सामने जो कार्य था उसके लिये किसी भी भौतिक मानदण्ड के आधार पर तो उनकी तैयारी नहीं थी। वे बचपन से देश-निकाले की सजा सहन कर रहे थे, “उन्होंने किसी पाठशाला में औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की थी, उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था, वे पश्चिमी रीति-रिवाज व भाषा से अपरिचित थे, एवं उनकी आयु 66 वर्ष थी। फिर भी आराम (सुख-साधन) का विचार किये बिना, जोखिमों की चिंता किये बिना और दिव्य सहायता पर पूर्णतः निर्भर होकर वे ईश्वरीय धर्म की विजय के लिये उठ खड़े हुए। उन्होंने तीन उपमहाद्वीपों के नौ राष्ट्रों के, विविधि लोगों के साथ वार्तालाप किया। उनके अथक प्रयासों की व्यापकता व गहनता ऐसी थी कि उसने “पूर्व व पश्चिम में उनके अनुयायियों को प्रशंसा व आश्चर्य के साथ अचम्भित कर दिया” और “धर्म के भविष्य पर अविनाशी प्रभाव डाला”।

अब्दुल-बहा की ऐतिहासिक यात्रा से सम्बन्धित कई उपलब्धियों को विश्व के बहाई, अगले कुछ वर्षों में सहर्ष याद करेंगे। लेकिन इस वर्षगांठ को मनाना सामयिक घटना से ऊपर है। ‘उन्होंने’ जिस बुद्धिमत्ता व प्रेमपूर्वक ‘उनकी’ यात्राएँ की उससे, बहाई समुदाय चाहे उन्हें ग्रहणशील लोगों को समाविष्ट करने का प्रयास करना हो, सेवा के लिये क्षमता का विकास करना हो, स्थानीय समुदाय का निर्माण करना हो, संस्थाओं को सुदृढ़ करना हो, सामाजिक

क्रिया में संलग्न होने के अवसर भुनाना हो, या सामाजिक संवादों में भाग लेना हो, प्रेरणा व बहु-विधा अन्तर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं। इसलिये हमें केवल इस बात की समीक्षा नहीं करनी चाहिये कि 'मास्टर' ने क्या उपलब्धि प्राप्त की और उसे गति प्रदान की, बल्कि उस कार्य की भी समीक्षा करनी चाहिये, जिस बचे हुए कार्य के लिये उन्होंने हमारा आह्वान किया। 'दिव्य योजना की पातियों' में 'उन्होंने' अपनी अन्तर्निहित अभिलाषा अभिव्यक्त की:

"आह ! यदि मैं इन क्षेत्रों में पैदल और अत्यधिक गरीबी में भी यात्रा कर सकता और शहरों, ग्रामों, पहाड़ों, रेगिस्तानों और समुद्रों पर 'या-बहा-उल-आभा' की पुकार लगाकर दिव्य शिक्षाओं का प्रसार कर सकता। ओह! मैं यह नहीं कर सकता। मुझे इसका बहुत खेद है। ईश्वर करे, तुम लोग इसे प्राप्त कर सको।"

लगभग एक शताब्दी बीत गई, जब ये शब्द उच्चारित किये गये थे। दिव्य योजना को स्तर व स्तर सफलता पूर्वक लागू किया जाता रहा। विश्व के हर कोने में धर्म स्थापित हो चुका है। हम उन स्थानों में स्थित (मौजूद) हैं, जहाँ अब्दुल-बहा जाने की उत्कट इच्छा रखते थे। अब व्यक्तियों, समुदायों एवं संस्थाओं के पास व्यवस्थित, स्थायी और सामंजस्यपूर्ण कार्य करने के लिये आवश्यक क्षमता है। इस संस्मरण के बहुमूल्य समय के दौरान 'उनके' निष्ठावान प्रेमीजनों में से प्रत्येक को 'उनके' नाम पर उठ खड़े होकर कार्य करना चाहिये। उस योजना को पूर्ण करने के लिये जिसे 'उनके' हमें अनन्त उपहार के रूप में दिया, चाहे कितना भी लघु क्यों न हो, हमें अपना योगदान देना चाहिये।

-विश्व न्याय मंदिर